अन्तरा-शब्दशक्ति

अभी हारी नहीं हूँ मै

(काव्य संग्रह)

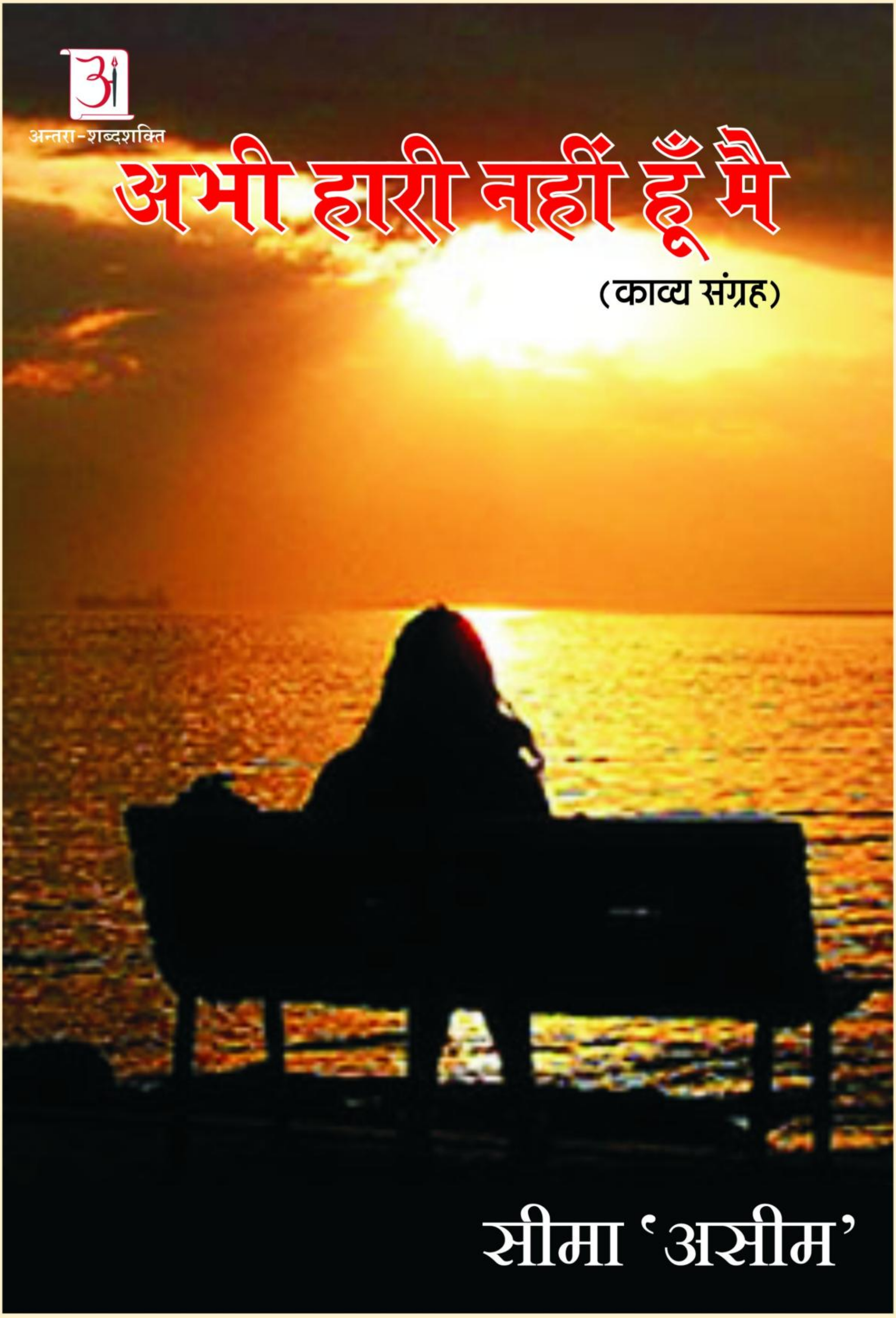

सीमा 'असीम'

अभी हारी नहीं हूँ मैं

(काव्य सँग्रह)

सीमा मिश्रा 'असीम

अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन

इंदौर,मध्यप्रदेश

ISBN- 978-93-88102-14-8

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन

कार्यालय: १५ नेहरु चौक वारासिवनी,जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१
शाखा: एस-२०७, नवीन भवन, इंदौर प्रेस क्लब परिसर, इंदौर (म.प्र.) ४५२००१
दूरभाष: (कार्या.) ०७६३३-२५३१५९ (मो)९४२४७६५२५९
अणुडाक- antrashabshakti@gmail.com
अंतरताना- www.antrashabdshakti.com

प्रथम संस्करण २०१८ © सीमा मिश्रा 'असीम
मूल्य: ४०.०० रुपये
आवरण चित्र : संदीप सोनी, वारासिवनी
मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

Abhi Haari Nahi Hun Main by Seema Mishra 'Aseem'

वैधानिक चेतावनी : इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है | लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुरुत्पार्दित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता हैं |प्रस्तृत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई हैं | अत : प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु प्रत्येक लेखक जिम्मेदार हैं| प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र,भाषाशैली,एवं स्थान सभी लखक की कल्पना हैं | किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं हैं|

भूमिका

अब तलक जो भी मिले, उन अनुभवों का शुक्रिया,
जो मिले अपना लिए ,कोई नहींशिकवा किया,
लम्हा लम्हा लिख रही है, जिन्दगी जैसे किताब,
हैं सभी अध्याय इसके, जिनको है मैंने जिया ।

जिन्दगी के इसी अध्याय के कुछ अनुभव कविताओं की शक्ल में आपके समक्ष है । एक कवि या रचनाकार सिर्फ सौन्दर्य या आपबीती ही नहीं लिखता बल्कि अपने आस -पास जो भी सही- गलत , सुन्दर -असुन्दर होते देखता है उसे व्यक्त करना भी उसकी नैतिक जिम्मेदारी होती है। मुझे एक बात की बहुत तकलीफ रहती हैकिशायद ही दुनिया का ऐसा कोई देश हो जहाँ स्त्री -पुरुष को समानता का दर्जा दिया जाता हो। यहतकलीफ तब और बढ़ जाती है जब ऐसा भारत में होता है,क्योंकि पूरी दुनियाँमे भारत ही एक मात्र ऐसा देश है जहाँ स्त्री को देवी का और देश को,.. देश की माटी को माँ का दर्ज़ा दिया जाता था.......था इसलिए क्योंकि आज के परिप्रेक्ष्य में यह बातसत्य प्रतीत नहीं होती-

जहाँ माटी को माँ कहते हैं, करते उसका अपमान नहीं ,
उस देश में जिन्दा नारी को , मिलता अब क्यों सम्मान नहीं ।

वर्तमान समय में स्त्री विमर्श का दिखावा ज्यादा है जबकि कुछ 20 -30 प्रतिशत स्त्रियों को छोड़ दिया जाए तो अधिकांश की स्थिति पहले से खराब है और ये 20- 30 प्रतिशत महिलाएँ जिन्होंने समाज से लड़ कर अपने सपनों को साकार किया है उन्हें भी गाहे ब गाहे समाज द्वारा चरित्र हनन का दंश झेलना पड़ता है -

सच्चा सारोकार नहीं ये, झूठा सारा प्रलाप है,
तुलसी के जीवन में,विष्णु के छल का अभिशाप है,
इंद्र के हाथों छली अहिल्या, सीता रावण के छल से,
नहीं कहीं पुरुषत्व कलंकित, नारी ने ढोये पाप हैं ।

इन विपरीत परिस्थितियों में भी एक बात बेहद सुकूनज़दा है कि स्त्री ने संघर्ष नहीं छोड़ा बल्कि हर बार और दृढ़ता से उठ खड़ी होती है.... ये कहते हुए......

"अभी हारी नहीं हूँ मैं" ...... कभी हार सकती नहीं हूँ मैं,..।

सीमा मिश्रा 'असीम'

अनुक्रमणिका

1. मरीचिका	5
2. तुम ने कहा	6
3. तल्खियाँ	7
4. सपनीला आसमान	8
5. नेहबन्ध	9
6. नासूर	10
7. पतंग है विहंग नहीं है	11
8. एक जिज्ञासा	12
9. मैं नहीं कहना चाहती तुमसे	13
10.आत्मादित्य भवः	14
11.ये सच है	15
12.अभी हारी नहीं हूँ मैं	16

मरीचिका

जलते रेगिस्तान के सफर में
जब मन तरस उठता है
एक क़तरा नमी के लिए
तब
अक्सर मन की चाह
साकार हो उठती है
मरीचिका के रूप में.......
मै भी
एक मरीचिका की तरह ही हूँ
जिसे सबने
अपनी ही चाहनाओं के अनुसार
देखा...समझा और
निराश लौट गए
क्योंकि.. .
मरीचिका की ही तरह
मैं भी
उनके मन का दर्पण नहीं बन सकती थी...
किन्तु......
मैं दृष्टि भ्रम तो नहीं हूँ
मरीचिका की तरह
अस्तित्वहीन तो नहीं हूँ
मेरा भी अपना अस्तित्व है
शायद एक बेरंग तसवीर की तरह
जिसमें रंग भले ही न हों
पर उसका अपना
एक आकार तो है....
जो मुझेन्तजार है उसका
जोमुझे
मेरे इसी रूप में पहचाने
और
इन चंद लकीरों को
मिटाए बिना ही
मुझ में भर दे....
अपनी इच्छाओं के रंग........।

तुम ने कहा

तुमने कहा था
मुझसे
मुझको ही माँगते वक्त ....
तुम कितनी आधुनिक
और खुले विचारों की हो
तुम्हारी हंसी से
खिल उठते हैं गुलाब
जब-जब तुम नजर उठा कर देखती हो
मेरी तरफ
मन का गोशागोशा जैसे
भर जाता है उजास से......
तुम्हारी उठी हुई आँखें
गवाही देतीं हैं
तुम्हारी सच्चाई की....
और मैं.....
तुम्हारी गर्वित परिणिता हो गई
फिर तुमने कहा
सुनो
ये तुम्हारा मायका नहीं
यहाँ मनमर्जी नहीं चलेगी तुम्हारी
सीखना होंगे तुम्हें कायदे
इस घर के
और मैं .....
तुम्हारे घर में ढल गई.....
एक दिन तुमने कहा
ये क्या
जब देखो सबसे हंसती ...
बात करती हो....
ठहाके लगाती हो ....
क्या ऐसी होती हैं ?
अच्छे घर की बहू बेटियां
जरा तो गम्भीरता सीखो
और मैं खामोश हो गई
फिर तुमने कहा
ये क्या टकटकी लगाकर
आँख में आँख डाल कर
बात करती हो
यही सीख कर आई हो ..
और मैनें ....
मैंने हतप्रभ हो कर
नजर हटा ली तुम्हारे चेहरे से......
फिर एक दिन
तुमने कहा
तुमने ढूँढ लिया है
एक नया आशियाना
बसा लिया है नया परिवार
क्योंकि मैं बदल गई हूँ
अब मुझमें पहले वाली
एक भी वो बात नही
जिसके कारण
तुमने मुझसे प्यार किया था
और मैं ....
अब मैं बहरी हो गई
अब मुझे सुनाई नहीं पडती
किसी की भी
कोई भी बात
अब मैं सुनती हूँ
सिर्फ और सिर्फ
अपने मन की बात.......!!!!!

तल्खियाँ

मुँह अंधेरे ही
सबसे छुपा कर
बिस्तर के साथ
तह कर रख देती है
सपनों को करीने से ....
बुहार कर
बाहर फेंक देती है
सारी तल्खियाँ...
मिटा देती है
रात का
हर निशां
पौंछे के साथ...
और
उँडेल देती है
लोटा भर नेह
आँगन में लगे
तुलसी के बिरवे में
ताकि
दूर रहे सारी नकारात्मकता
उसकी देहरी से.....
मुँह अंधेरे ही
चूल्हे में उगा लेती है
अपना सूरज
गरमाने लगती है
अलाव
ताकि बुझा सके
सबके
पेट की आग.....
चढ़ी दोपहरी में
तपते सूरज की छाँव में
भागती रहती है
जिम्मेदारी के खडाऊँ पहने
चार पैसे की आड़ में
अहमियत कमाने
खुद की अहमियत जताने के लिए
कमाना जरूरी है
कमाना इसलिए भी जरूरी है
क्योंकि वह अपने लिए भी
बराबर के सम्मान का सपना देखती है
कोई फर्क नहीं पड़ता
कि सपना देखने वाली आँखें
किसी अनपढ़ की हैं
या दानिशमंद की
घर कामकरनेवाली स्त्री की हों
या उच्चपदासीन स्त्री की....
गाँव की अल्हड़ बाला की हो
या महानगरीय नवयौवना की......
दिनभर
कतरा-कतरा जोड़कर
गढ़ती है अपना अस्तित्व .....
साँझ ढले
वह फिर
अपना अस्तित्व
बिस्तर की तरह बिछाती है
और सो जाती है
ओढ़कर तह किए सपनों को
ताकि
सुबह फिर जला सके
अपना सूरज,...!!!!!

सपनीला आसमान

सूरज का कलेवा ले
निकल तो पडे हो
छूने को
सपनीला आसमान
पर याद रखना
धरती और सूर्य के
बीच की दूरी
कभी भी नहीं बढती
सफर के ....
किसी भी मोड पर ....
विमुख नहीं होते
एकदूजे से
सुनो ....
तुम भी
अपने
आसमां को छूकर
लौट आना
सांझ ढले
जब खत्म होने लगे
रौशनी का पाथेय........!!!!!

नेहबन्ध

नेहबन्ध
मत जोड़ो
एहसान की गांठ से ......
जिसमें
दोनों ही सिरों का
अलग-अलग अस्तित्व बना रहता है
यदि
जोड़ना ही है
तो
जोड़ो जुलाहे की तरह
जो दोनों सिरों को मिलाकर
कुछ इस तरह लपेटता है
कि
दोनों अलग होकर भी
यूँ एक हो जाते हैं
कि
दुनिया देख ही नहीपाती
और इसीलिए
तोड़ भी नहीं पातीं......।

नासूर

कई बार
छोटी सी फांस भी
नासूर बन जाती है...
जाने कौन सी
चुम्बक की सी तासीर होती है
इसमें
जो हर बार
मनके तहखाने में पड़ी
हजारों
भूली बिसरी स्मृतियों ....
और
एहसासों में से
खींच लाती है....
ठीक वही एहसास
चुन-चुनकर ....
और
खड़ा कर देती है
एक पहाड़
तल्खियों का....
एक छोटी सी राई पर
और
उस पहाड़ के पीछे
छुप जाता है....
खुशी का
हर पल
हर भाव.....
खुशियों में चुम्बक क्यों नहीं होता.....?????

पतंग है विहंग नहीं है

उड़ती फिरती है
लेकिन उन्मुक्त नहीं है....
पतंग है
विहंग नहीं है.....
जो बंधी है
इक डोर से
जिसका दूसरा सिरा है
तुम्हारे हाथ में
कब और कितनी
ढील देना है
इसका निर्णय तुम्हारे
अधिकार में है
बंधन में रहते हुए भी
जब कभी मौज में आकर
पतंग लहराती
बलखाती
तुम तुरन्त डोर खींचकर
कुछ झटके देकर
सीधा कर देते हो.....
जब थक जाते हैं
तुम्हारे हाथ
तो वह डोर पकड़ा देते हो
छोटू को
छोटू हमारा बेटा..........
नहीं
इस बात का
स्त्री से
कोई लेना-देना नहीं ......

एक जिज्ञासा

वह एक घड़ी......
जिस घड़ी
रामने रावणको मारा होगा
चहुँ ओर
क्या
सिर्फ हर्ष ही व्यापा होगा
नाभि के राज की निशानदेही देते वक्त
एक पल को ही सही
दिल तो विभीषण का भी काँपा
होगा......
जिस घड़ी
राम ने सिंहासन
विभीषण को सौंपा होगा
लंका में भी
रामराज्य का एहसास सा कौंधा होगा
बरसी होंगी बधाइयाँ
स्वर्ग से भी
पुष्पवर्षा के संग
क्या
मंदोदरी ने
क्षणिक भावावेश में ही सही
भ्रातृद्रोह के लिए
एक बार भी
देवर कोन कोसा होगा.....
जिस घड़ी
रामने
सीता को अग्नि में उतारा होगा
नरश्रेष्ठ को
ये ख्याल भी न आया होगा
कि
हर युग में
उनके नाम की दुहाई पर
न जाने
कितनी सीताओं को
इसी आग में जलना होगा.....
कैद हो जाएगी
निश्छलता सदा को
एक रेखा में
और
छली को मयस्सर
खुला आसमान होगा
त्याग दी जाएगी
कितनी ही सीताएँ
हर युग में
क्योंकि राम को
पत्नि से ज्यादा
धोबी पर भरोसा होगा
अग्निपरीक्षा के
बाद भी
निर्दोष सीताओं को
हर बार
धरती में समाना होगा .....
धर्माचरण की मिशाल रखते वक्त
क्या मर्यादा पुरुषोत्तम ने
एक बार भी
इस तरह सोचा होगा..........????

मैं नहीं कहना चाहती तुमसे

उठो
चलो मुँह धोलो
देखो तो
दिन भर के श्रम के पसीने
और उस पर चिपकी धूल से
तुम्हारा चेहरा मलिन
हो गया है
ताड़ना के
मूक प्रतिरोध में
बहे आँसू
चेहरे पर
कितनी लकीरें छोड़ गए हैं
काजल फैल गया है
और
तुम्हारे माथे की
सिन्दूरी बिन्दी
उसने
तुम्हारे पूरे माथे को ही
लाल कर दिया है।
नहीं .... मैं नहीं कहना चाहती
उठो
जरा अपने ये कुंतल संवार लो
देखो तो
ये चेहरे पर
कंधों पर
किस तरह बेतरतीब बिखरे हुए हैं
रूखे से, उलझे हुए
तुम्हारे उजड़े दिल की
कहानी सी कह रहे हैं।
मैं नहीं कहना चाहती
उठो
कुछ नहीं तो
अपनी साड़ी ही बदल लो
देखो तो
इस पर
कितने दाग लग गए हैं
तेल - मसाले के ...
खेत की मिट्टी के...
चूल्हे की राख के...
गोबरके....और
कल जब शराब के नशे में
तुम्हारे पति ने तुम पर.....
नहीं ......
मैं ऐसा कुछ भी नहीं कहना चाहती
मैं तो बस....
तुम्हारे सामने
रखना चाहती हूँ
एक आईना
ताकि
तुमस्वंय
अपनी स्थिति देखो......
स्वंय निर्णय लो.....
और
बदल दो
हर उस बिम्ब को
जो तुम्हें नापसंद हो.........

आत्मादित्य भवः

सूरज नहीं होता
औरतोंके हिस्से में
हर एक कतरा
रोशनी
केलिए
जलाना पड़ता है
तन का दिया
फिर भी
वह रोशनी
उनके हिस्से में
नहींआती
क्योंकि
दियातले
हमेशा
अंधेरा ही होताहै.......।
इसलिए....
अब
आत्मदीपोभवः नहीं.......
आत्मादित्य भवः......

ये सच है

जब जब भी
तुम या तुम्हारी परछाई
आई जीवन में
वजूद मेरा टूटा भी ....
बिखरा भी.....
मानती हूँ कि
क्षण भर को
डगमगाई भी
मेरी आस्था
खुद पर से भी....
ईश्वर पर से भी....
कई बार चाहा कि
औरों की तरह
सरका दूँ मैं भी
दूसरों के काँधों पर
जिम्मेदारियाँ भी...
चुनौतियाँ भी....
नजरअंदाज कर दूँ
हर उस काम ..
उस परिस्थिति को
जिसमें जरा भी संभावना हो
तुमसे सामना होने की
स्वीकार है मुझे
तुमसे बचने के लिए
करना चाहा विद्रोह भी

मैंने कई बार
सत्य से भी...
अपने उसूलों से भी
पर
उतना ही सच यह भी है
जितनी बार भी
तुमने तोड़ा मुझे
मैंने स्वयं को
फिर से गढ़ा,
पहले से कहीं अधिक श्रेष्ठ ....
कहीं अधिक आस्थावान ......
कहीं अधिक दृढप्रतिज्ञ.....
कहीं अधिक सत्यनिष्ठ ....
तुम नआती तो
कैसे गढ़ती
मैं अपना वर्तमान ....
कैसे लिखती
मैं अपना भविष्य भी.....
शुक्रिया
मेरी नाकामियों
मेरी आलोचनाओं
इक तुम्हारे बिना
कैसे बनती मैं
सीमा से
'असीम'.........

अभी हारी नहीं हूँ मैं

अभी हारी नहीं हूँ मैं
जीना सीख रही हूँ...
विचार और व्यवहार के
अन्तर को समझकर
पूजा का नहीं.......!
सम्मान का अधिकार पाने के लिए ही
लड़ रही हूँ मैं
अभी हारी नहीं हूँ मैं.....
सलीबों का सफर नियति है मेरी...
मानती हूँ.......!
माँ, बहन, बेटी, पत्नीके
रिश्तों की सम्मानित रेख के परे
मात्र एक नारी देह हूँ ...
जानती हूँ.......
रेख से देह की दूरी मिटाने को
निरन्तर चल रही हूँ मैं
अभी हारी नहीं हूँ मैं
जानती हूँ है कठिन संकल्प मेरा
और चलना भी है मुझको हीअकेला
पर महज कुछ दूर तक ही
राह एकाकी है मेरी
फिर तो इस दीपक की
नन्ही ज्योत से ही आग लेकर
जगमगा उठेगी लम्बी दीपमाला
बस
इसी विश्वास की इक ओट लेकर
राह की दुश्वारियों की आंधियों में
मुस्कुराती.....
दीपशिखा सी जल रही हूँ मैं
अभी हारी नहीं हूँ मैं.......
हैं क्षणिक ही
मार्ग के अवरोध सारे
ज्यों
चमकते सूर्य पर हों मेघ काले
फिर चमक उठेगा शक्तिपुंज बनकर
छुप गया है ओट में प्रतिकूलता की
आज ये संकल्प का सूरज जोमेरा
इस क्षणिक
व्यवधान के धोखे में आकर
तुम समझ लेना न
ठंडी राख मुझको.....
हाँ........
दबी हुई एक चिंगारी हूँ मैं
अभी हारी नहीं हूँ मैं......
कभी हार सकती नहीं हूँ मैं......

व्यक्तित्व दर्पण

नाम - सीमा मिश्रा

उपनाम - असीम

पिता - श्री रामकृष्ण शुक्ल

माता - श्रीमती कुसुम शुक्ल

पति - डॉ. स्मृति रत्न मिश्र

जन्म - 1 मई

शिक्षा - एम.एस.सी. जन्तु विज्ञान, एम.एड.

संप्रति - 1995 से आदिवासी विकास विभाग में व्याख्याता

वर्तमान पद स्थापना

उत्कृष्टता उ.मा. विद्यालय, तिरला, जिला धार (म.प्र.)

प्रकाशन

गुंजन, चमन दर चमन, यशधारा, सृजन- शब्द से शक्ति का, हिन्दी सागर, भारत के युवा कवि एवं कवियित्रियाँ एवं नारी काव्य सागर में प्रकाशन

सम्मान

शिक्षा के क्षेत्र में नवाचार के लिए 'राष्ट्रीय शिक्षा प्रशिक्षण एवं अनुसंधान परिषद' नई दिल्ली के द्वारा सम्मानित।

धार की संस्था 'भोज शोध संस्थान' द्वारा 'श्रेष्ठ नारी' सम्मान।

राष्ट्रीय कवि संगम के कवयित्री प्रकोष्ठ द्वारा शब्दशक्ति सम्मान।

विश्व हिन्दी रचनाकार मंच द्वारा 'साहित्य सागर', 'हिन्दी सेवी', श्रेष्ठ शब्द शिल्पी व नारी सागर सम्मान

मंचीय सक्रियता

स्थानीय काव्य गोष्ठियों व कवि सम्मेलनों में भागीदारी ।

लेखन का उद्‌देश्य

विधिवत लेखन सर्विस में आने के बाद ही शुरु हुआ। सिद्‌धांतो का हकीकत से टकराव.. दोहरे सामाजिक मापदण्ड .., स्त्रियों एवं बच्चियों की स्थिती.., सबसे मन बेचैन होता है .. बस यही चीज है जो लिखने के लिए मजबूर करती रहती है।

Women आवाज़ आधी आबादी की गूँज...
www.WomenAawaz.com

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

978-93-88102-14-8

मूल्य- 40/-

१५, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१, संपर्क- ९४२४७६५२५९, अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com